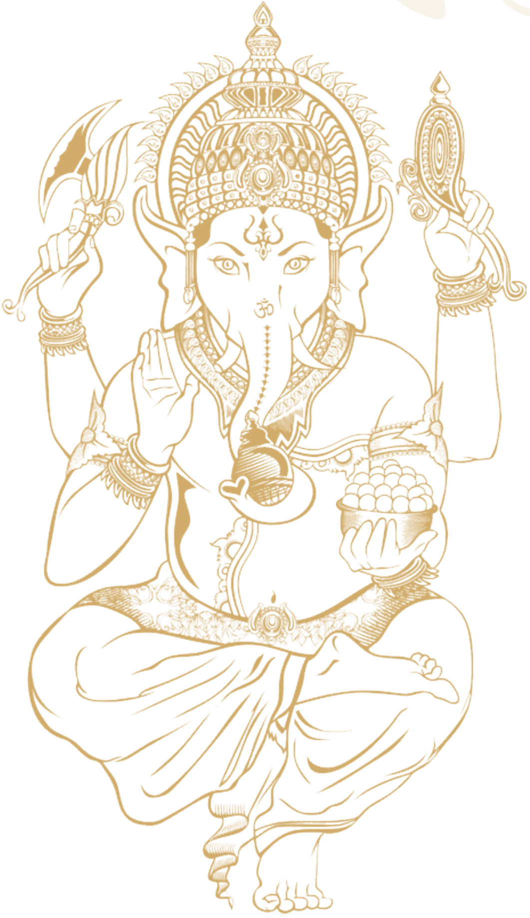

Ishu

17 Jun 2025

02:06 PM

Phulera

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120325601

तिथि 17/06/2025 **समय** 14:06:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Phulera **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:48
अक्षांश 26:52:00 उत्तर **रेखांश** 75:16:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:28:56 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	07:20:29 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:00:58 घं	योनि	अश्व
सूर्योदय	05:35:12 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	19:24:32 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	मानव
शक संवत	1947	वर्ग	मेष
मास	आषाढ़	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	वायु
तिथि	6	जन्म नामाक्षर	सी-सीमा
नक्षत्र	शतभिषा	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
योग	प्रीति	होरा	सूर्य
करण	वणिज	चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी		योगिनी	
राहु 8वर्ष 3मा 19दि		धान्या 1वर्ष 4मा 18दि	
राहु		धान्या	
17/06/2025		17/06/2025	
06/10/2033		05/11/2026	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	17/06/2025		00/00/0000
बुध	07/04/2026		17/06/2025
केतु	26/04/2027	सिद्धा	05/12/2025
शुक्र	25/04/2030	संकटा	05/08/2026
सूर्य	20/03/2031	मंगला	05/09/2026
चन्द्र	18/09/2032	पिंगला	05/11/2026
मंगल	06/10/2033		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:43:16	कन्या	चित्रा	1	मंगल	मंगल	---	0:00			
सूर्य			02:12:10	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	केतु	सम राशि	2.13	कलत्र	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			13:50:54	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	सम राशि	0.96	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			05:47:13	सिंह	मघा	2	केतु	राहु	मित्र राशि	1.21	ज्ञाति	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध			21:31:04	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	स्वराशि	1.11	आत्मा	ज्ञाति	सम्पत
गुरु		अ	07:29:20	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.38	मातृ	धन	जन्म
शुक्र			17:10:43	मेष	भरणी	2	शुक्र	चंद्र	सम राशि	1.29	अमात्य	कलत्र	साधक
शनि			07:09:59	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	1.14	पुत्र	आयु	विपत
राहु	व		28:03:12	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		28:03:12	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	चंद्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

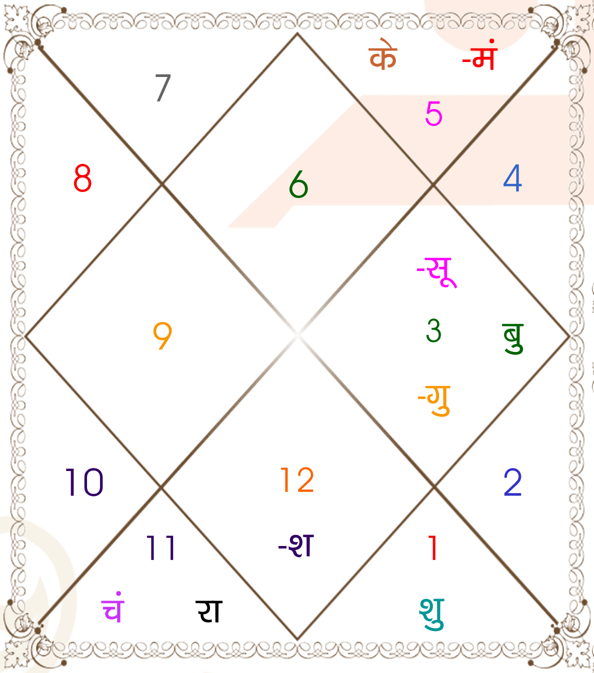

चन्द्र कुंडली

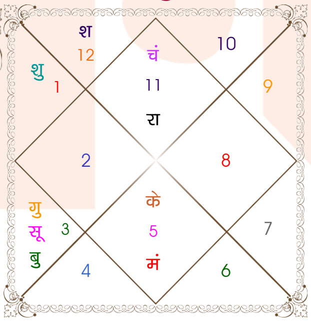

नवमांश कुंडली

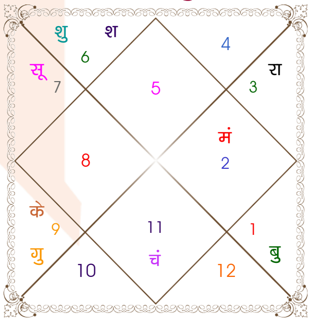

सर्वाष्टकवर्ग

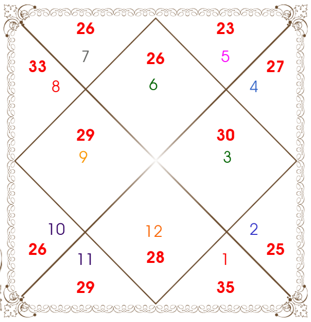

दशमांश कुंडली

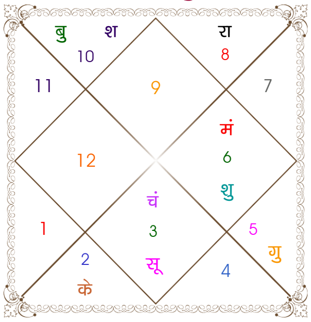

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

नक्षत्रफल

आप शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ग मेष, योनि अश्व, गण राक्षस, वर्ण शूद्र तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "सि" या "सी" अक्षर से होगा यथा- , सीता आदि।

आप ठंड से हमेशा व्याकुलता की अनुभूति करेंगी एवं इसे सहन करने में प्रायः असमर्थ रहेंगी। आप एक वीर एवं साहसी महिला होंगी एवं वीरता गुणों से सुसम्पन्न रहकर अपने समस्त सांसारिक कार्य कलापों को सुसम्पन्न करेंगी। साथ ही अन्य साहसिक कार्य करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगी एवं दया तथा करूणा का भाव अल्प मात्रा में ही रहेगा। आप एक दक्ष एवं चतुर महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई से ही सम्पन्न करेंगी। आपकी चतुराई से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथा योग्य आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप नित्य सफल रहेंगी तथा वे सभी आपसे प्रभावित तथा पूर्ण रूप से भयभीत से रहेंगे।

शीतभीरूरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारूणो वारूणोडनि यस्य स सम्भवं।।
जातकाभरणम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

ज्योतिष शास्त्र में आपकी रूचि तथा श्रद्धा रहेगी अतः आप परिश्रम एवं लगनशीलता से इसका विस्तृत ज्ञान भी अर्जित करेंगी। आपका स्वभाव शान्त वृतियों से युक्त रहेगा तथा उग्र वृतियों का इसमें अभाव रहेगा। आप में अल्प मात्रा में भोजन करना प्रियकर लगेगा तथा इससे आपको आनन्दानुभूति भी प्राप्त होगी।

कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ऽल्पभुक् साहसी।।
जातक परिजातः

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

अतुल धनैश्वर्य से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा समाज में एक धनवान महिला के रूप में जानी जाएंगी। लेकिन आप में कृपणता के भाव की अधिकता रहेगी अतः अर्जित धन को व्यय करने की अपेक्षा आप उसके संचय करने में ही प्रयत्नशील रहेंगी। आपकी इस प्रवृति से अन्य जनों को भी कभी कभी काफी असुविधा का सामना करना पड़ेगा। पुरूष वर्ग में आप आदरणीया समझी जाएंगी एवं आपके भी उनसे मधुर संबंध होंगे एवं समय के अनुसार उनकी सेवा तथा सहयोग प्रदान करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आप घर से बाहर परदेश या विदेश में

भी नित्य भ्रमणशील रहेंगी तथा घर में कम ही निवास करेंगी।

कृपणो धनपूर्णः स्यात्परदारोपसेवकः।
जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आप की प्रवृति स्पष्टवादी होगी तथा जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से कहेंगी अतः कई लोग आपसे प्रसन्न तथा कुछ लोग अप्रसन्न भी रहेंगे। विभिन्न प्रकार के व्यसनों में भी आपकी आसक्ति रहेगी तथा समय समय पर इनका उपभोग भी करती रहेंगी एवं आप अपने कार्य या बात को ही सर्वमान्य समझेंगी एवं उससे मनाने के लिए कृत संकल्प रहेंगी।

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्ग्राह्यः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यों में प्रवृत तथा स्वतंत्र होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

कुम्भ राशि में जन्म होने के कारण आपकी नाक ऊंची होगी एवं मुख तथा मस्तक भी विस्तृत आकार से युक्त रहेगा। साथ ही आपके हाथ, पैर तथा कमर में भी स्थूलता व्याप्त रहेगी। आपके शरीर में लावण्यता की अल्पता रहेगी परन्तु इससे आपके सौन्दर्य तथा आकर्षण में विशेष अन्तर नहीं आएगा। आपके सामाजिक तथा वैयक्तिक संबंध विस्तृत रहेंगे। आप में विद्रोह की भावना भी रहेगी तथा समय समय पर परिवारिक तथा अन्य सामाजिक जनों के मध्य इसका प्रदर्शन करती रहेंगी। साथ ही आपके स्वभाव में क्रोध एवं उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा जिनका आप प्रदर्शन करती रहेंगी। आप में आलस का भाव भी रहेगा आप शिल्प विद्या या

चित्रकारी के क्षेत्र में विशेष रूचिशील रहेंगी तथा प्रयत्नपूर्वक इसमें विशेष योग्यता तथा ख्याति अर्जित करेंगी। इसके साथ ही कभी कभी आप मानसिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगी।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

आपको विविध प्रकार के शास्त्रों का अच्छा ज्ञान रहेगा अतः एक विदुषी के रूप में समाज में आपको पूर्ण आदर सम्मान तथा यश की प्राप्ति होगी। साथ ही नाना प्रकार के कार्यो में भी आप दक्ष रहेंगी। इसके साथ ही दुश्मनों को पराजित करने में आप हमेशा सफल होंगी तथा वे भी आपसे नित्य भयभीत तथा प्रभावित रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप गुप्त रूप से कूर कर्मो को करने में भी प्रयत्नशील रहेंगी या अप्रत्यक्ष रूप से अपना सहयोग इनको करने के लिए प्रदान करेंगी। अन्य लोगों को मानसिक आप की यात्रादि करने या घूमने फिरने में अत्यन्त ही रूचि रहेगी तथा अपना अधिकांश समय इसी पर व्यतीत करेंगी। आप दूसरे के धन के प्रति लोलुपता का भाव रखेंगी एवथ उसे प्राप्त करने के लिए भी नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी विषम रहेगी तथा समय समय पर इसमें हानि तथा वृद्धि होती रहेगी। इसके साथ ही सुगन्धित द्रव्यों के अनुलेपन तथा पुष्पादि के प्रति भी आपका अनुराग रहेगा एवं यत्नपूर्वक आप जीवन में इनका उपयोग करती रहेंगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप एक विदुषी रहेंगी तथा अपनी विद्धता के कारण समाज में सम्मान तथा ख्याति अर्जित करेंगी परन्तु अन्य विद्धजनों को आप कभी भी यथोचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगी इससे कई श्रेष्ठ लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आप जीवन में सामान्यतया सर्वत्र सफलता एवं विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगी। आप सदाचरण से युक्त रहेंगी एवं पूर्ण रूपेण इसका आजीवन यत्नपूर्वक पालन करती रहेंगी। धन सम्पत्ति का आपके पास अभाव कभी कभी ही परिलक्षित होगा अन्यथा इससे आप

सुसम्पन्न ही रहेंगी। गुरुजनों तथा श्रेष्ठ संबंधियों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा का भाव रहेगा एवं इनकी सहायता तथा सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। पुरूष वर्ग के मध्य भी आपका आकर्षण रहेगा एवं उनके मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय समझी जाएंगी। साथ ही आप एक विस्तृत परिवार की स्वामिनी भी रहेगी तथा जाति एवं वर्ग के लोगों के भलाई के कार्यों में नित्य तत्पर रहेंगी तथा जो उनके लिए अच्छा होगा उसे पूर्ण सिद्ध करने में अपना विशिष्ट योगदान प्रदान करेंगी। अतः जाति तथा बन्धु वर्ग के मध्य आप एक आदरणीय तथा सम्माननीय पद को भी प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से आप युक्त रहेंगी एवं जीवन में इसका अनुपालन करके सुखानुभूति प्राप्त करेंगी।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन की लम्बाई अधिक रहेगी तथा नसे भी शरीर से बाहर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होंगी। साथ ही मित्रों के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह की भावना होगी तथा उनके सहयोग के लिए नित्य तत्पर रहेंगी।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप स्वभाव से ही दानी प्रवृति की महिला होंगी तथा जीवन में यथा योग्य इस प्रवृति का यत्नपूर्वक अनुपालन करती रहेंगी। इसके साथ ही आप में कृतज्ञता का भाव भी विद्य मान रहेगा एवं अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को स्वीकार करेंगी एवं उनका हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगी। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर एवं दर्शनीय रहेंगी तथा बुद्धि भी सरलता के भाव से युक्त रहेंगी। साथ ही आप किसी के प्रति कभी भी धोखा या अन्य तरह से चालाकी का प्रदर्शन भी नहीं करेंगी। इस प्रकार अपने अच्छे स्वभाव तथा सत्कार्यों के कारण आप समाज में पूर्ण रूपेण लोकप्रिय रहेंगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आप अपने बाहुबल से धनार्जन करेंगी तथा साहस पूर्वक समस्त सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों से आप सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलने वाली होंगी। साथ ही आपके मन में करूणा की भावना भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। लेकिन आप एक साहसी महिला होंगी अतः आपके अधिकांश कार्य साहस पूर्वक ही सम्पन्न होंगे। आप में क्रोध की भी प्रबलता रहेगी तथा इसका आप अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करती रहेंगी। आपकी प्रवृति अन्य जनों से विवादादि करने की भी रहेगी। इसके अतिरिक्त शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी।

जीवन में कभी कभी आप उन्माद या प्रमेह रोग से व्याकुल हो सकती हैं। आपके सौन्दर्य भी सामान्य होगा। परन्तु अपने सम्भाषण में कभी कभी आप कटु शब्दों का उपयोग करेंगी जिससे श्रोता तथा अन्य सामाजिक जन आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वच्छन्द प्रकृति की महिए होंगी तथा स्वतंत्रता पूर्वक अपने कार्य कलापों को करने के लिए उत्सुक रहेंगी। अनावश्यक बाह्य हस्तक्षेप तथा दवाब आपको पसन्द नहीं रहेगा। आप एक गुणवती महिला होंगी एवं शौर्य गुणों से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी एवं साहस पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगी। आप में तेजस्विता का भाव भी रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप वीणा या अन्य वाद्ययंत्रों में रूचिशील रहेंगी एवं इनके वादन में विशेष योग्यता तथा ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक विश्वासीय महिला होंगी तथा कार्य क्षेत्र में आप पूर्ण सम्माननीय एवं विश्वास पात्र समझी जाएंगी।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर

सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गंडयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा प्रायः अनिष्ट फल देने वाले ही होंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र गंडयोग तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सजग रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता,

व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा या अन्य शुभ कार्यों में असफलता की प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तेल, तिल, कम्बल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपकी समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी एवं शारीरिक स्वास्थ्य में लाभ होगा। साथ ही समस्त अशुभ प्रभाव समाप्त होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त सर्वत्र लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com